खण्ड 'क'

प्रश्न संख्या : 1

क) 'जन्म दिया माता-सा जिसने' हमारी मातृभूमि के लिए कहा गया है। उसे मां कहा जाना चाहिए क्योंकि वह मृत्यु पर्यंत सबका पालन-पोषण करती है।

ख) मातृभूमि मां से बढ़कर है क्योंकि मां केवल बाल्यकाल में ही हमें अपनी गोद में बिठाती है लेकिन मातृभूमि मृत्यु पर्यंत हमारे साथ रहती है व इसके दया प्रवाहों का सपने में भी अंत नहीं होता।

ग) काव्यांश की पहली पंक्ति में 'जन्म दिया माता-सा जिसने' में उपमा अलंकार है व अंतिम पंक्ति 'उसके चरण कमल' में मानवीकरण अलंकार निहित है।

घ) 'जिसके दया प्रवाहों का होता न कभी सपने में अंत' से कवि मातृभूमि की महिमा का वर्णन करता है कि हमारी मातृभूमि हमपर जीवन पर्यंत उपकार करती रहती है।

32

(ङ) काव्यांश का केंद्रीय भाव :- प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने मातृभूमि के ... का वर्णन किया है व उसे जन्मदात्री ... अर्थात हमारी मां से भी बढ़कर बताया है क्योंकि वह हमें छाया ... हमारी रक्षा करती है व जीवन भर पालन करती है।

प्रश्न संख्या : 2

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक : आदर्श और उज्ज्वल चरित्र

(ख) विवेकानंद 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत' मंत्र का उल्ले... करते हैं जिसका मूल स्रोत 'कठोपनिषद' है।

(ग) मंत्र का शाब्दिक अर्थ है कि 'उठो, जागो और ऐसे श्रेष्ठजनों ... पास जाओ, जो तुम्हारा परिचय परमात्मा से करा सकें।

(घ) इस मंत्र में तीन बातें निहित हैं। पहली, तुम जो निद्रा में बे... पड़े हो, उसका त्याग करो और उठकर बैठ जाओ। दूसरी, अ...

उपकारी ... तती ... देती है,

खोल दो अर्थात विवेक को जाग्रत करो । तीसरी, चलो और उन श्रेष्ठ पुरुषों के पास जाओ जो तुम्हें तुम्हारे लक्ष्य का बोध करा सकें।

ङ) आस्था, निष्ठा, संकल्प और पुरुषार्थ । निम्न गुणों से जीवन को नई दिशा मिल सकती है ।

च) प्रमाद का अर्थ है - नैतिक मूल्यों को नकार देना, अपनों से दूर हो जाना, सही गलत को समझने का विवेक न होना । 'मैं' का संवेदन भी प्रमाद है, जो दुख का कारण बनता है ।

छ) प्रमादी व्यक्ति अपनी पहचान औरों के नजरिये से, मान्यता से, पसंद से तथा स्वीकृति से करता है ।

ज) बुराईयों की तुलना दूब से की गई है क्योंकि बुराई दूब की तरह फैलती है, मगर इसकी जड़े गहरी नहीं होती । इन्हें थोड़े से प्रयास से उखाड़ा जा सकता है ।

ख ... के ... युध ... खे

(झ) 'स्वयं द्वारा स्वयं को देखने का क्षण ही चरित्र की सही पहचान है' से आशय है कि हमें दूसरों के नजरिये से अपना आकलन करना चाहिए, ये प्रमादी व्यक्ति के लक्षण हैं। जब हम अपनी खुली रखते हैं तो बुराईयों की घुसपैठ संभव नहीं।

(ञ) सरल वाक्य में :-
आदत और संस्कारों को बदले बिना सुख, साधना और सा सम्भव नहीं है।

(ट) परिस्थितियाँ :- 'परि' उपसर्ग
नैतिक :- 'इक' प्रत्यय

खण्ड 'ख'

प्रश्न संख्या : 3

निबंध :- मेरे सपनों का भारत

निबंध की रूपरेखा:

(1) प्रस्तावना
(2) विषय विस्तार :- (क) भारतवर्ष - ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
(ख) वर्तमान स्थिति
(ग) भारत की प्रमुख समस्याएं
(i) आतंकवाद (ii) जातिवाद (iii) भ्रष्टाचार (iv) गरीबी आदि
(घ) भविष्य की संभावनाएं व मेरे विचार
(3) उपसंहार / निष्कर्ष

" यूनान मिस्त्र रोमां, सब मिट गए जहां से,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ॥ "

प्रस्तावना :- हजारों सालों का अतीत साक्षी है कि भारत प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण, ऋषियों - मुनियों की स्थली, गंगा - जमुना जैसी नदियों से सिंचित, जगद्गुरु व विश्व प्रख्यात "सोने की चिड़िया"

रहा है व आज भी विश्व पटल पर भारत देश की ख्याति है। भारत जैसा देश संपूर्ण जगत के लिए मिशाल रहा है कि किस प्रकार इस देश ने दासताओं के बावजूद अपना अस्तित्व बनाए रखा और निरंतर प्रगति करते रहा है। यही कारण है कि इतिहास तथा साहित्य ने इसे 'भारत माता' कहा है।

विषय विस्तार :- "चंदन है इस देश की माटी
तपो भूमि, हर ग्राम है
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है॥"

अतीत के पृष्ठों में झांका जाए तो भारत सर्वगुण संपन्न रहा लेकिन पहले मुगलों तथा फिर यूरोपीय ब्रिटिशों की दासता के पश्चात भारत को 1947 में आजादी मिली। भारत वर्ष के लोगों ने संघर्षरत जीवन जिया और दृढ संकल्प के बल पर इस भारत भूमि को महान बनाया। आजादी से अब तक भारत ने निरंतर प्रगति की है, चाहे वह उद्योगों के क्षेत्र में हो, चाहे विज्ञान या कला के क्षेत्र में हो, चाहे खेल में हो। वर्तमान में भारतीय संस्कृति का दुनिया लोहा मानती है चाहे अमेरिका हो या जर्मनी, चीन हो या जापान, हर किसी को इस देश पर गर्व है। लेकिन मेरे विचार से कई जड़ताएं, कई समस्याएं

हैं जो इसके महत्व को कम करती हैं। भ्रष्टाचार, बलात्कार, आतंकवाद, जातिवाद, गरीबी कई ऐसी समस्याएं हैं, जिनको खत्म किया जाना इस विकासशील राष्ट्र के लिए अत्यंत जरूरी है।

"खत्म होंगी ये सभी समस्याएं, जो देश की सबसे बड़ी बीमारी हैं,
आजाद तो हम हो गए, पर इंकलाब अब भी जारी है।।"

लेकिन प्रश्न यह उठता है कि यह कैसे किया जाए? व भविष्य का भारत कैसे निर्मित होगा, तो इसका स्पष्ट उत्तर है - आज का युवा वर्ग। क्योंकि भारत सबसे युवा देश है व इसके युवाओं में नवनिर्माण के लिए उत्साह है। यदि मुझसे इस विषय में पूछा जाए तो मेरा उत्तर कुछ ऐसा होगा जो कि आदर्श सूचक है -

क्या हुआ दुनिया अगर मरघट बनी
अभी मेरी आखिरी आवाज बाकी है।
बहुत हुई हैवानियत की इंतेहा
आदमीयत का अगर आगाज बाकी है।।

मेरे सपनों के भारत में कोई भी व्यक्ति गरीब नहीं होगा, सभी प्रेम व सौहार्दपूर्ण जीवन जिएंगे। उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम सभी तरफ लोगों में एकता होगी, जहां बच्चे शिक्षा ग्रहण करेंगे व बड़े होकर

राष्ट्रसेवक बनेंगे, जहां महिला सशक्तीकरण होगा, एक आतंकवाद मुक्त राष्ट्र, भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र बनेगा। जहां हर किसी की जुबान पर ये पंक्तियां होंगी -

हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है।

उपसंहार : एक अच्छे भारत देश का सपना कोई कल्पना नहीं है, इसे यथार्थ रूप में परिवर्तित करना हमारी स्वयं की जिम्मेवारी है। हमारा भारत एक आदर्श राष्ट्र के रूप में विकसित होने वाला है। गांधी-नेहरू जैसे महापुरुषों की आदर्श भारत की संकल्पना जरूर सत्य होगी। लेकिन हमें अपनी सोच में, सरकारों को अपनी नीतियों में परिवर्तन लाना पड़ेगा। "रामधारी सिंह दिनकर" की पंक्तियां प्रेरणा रूप संदेश देती हैं-

"मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीष चढ़ाने
जिस पथ जाते वीर अनेक॥"

प्रश्न : 4 (संपादक को पत्र)

14 मार्च 2015

प्रेषक का नाम व पता
अ०ब०स
परीक्षा भवन

सेवा में,
संपादक
अमर उजाला
नई दिल्ली

विषय :- शहरों में वाहन-चालकों का यातायात नियमों पालन न करने के संदर्भ में,

महोदय,
मैं आपके लोकप्रिय समाचार पत्र के माध्यम से सामान्य जनता व संबाधित अधिकारियों का ध्यान निम्न समस्या की ओर आकृष्ट करना चाहता हूं।
मैं दिल्ली के क. ख. ग. नगर का निवासी हूं व प्रतिदिन दिल्ली की सड़कों में सफर करता हूं। प्रायः देखने में आता है कि यातायात चालक

नियमों की अनदेखी करते हैं व असुविधा का कारण बनते हैं। उदाहरण स्वरूप तेज गति से वाहन चलाना, दुपहिया वाहन चालकों का हेलमेट न लगाना आदि। वे यातायात नियमों की धज्जियां उड़ाते प्रतीत होते हैं, जो कि बहुत ही चिंताजनक समस्या है। इसके लिए संबंधित निममों को सचेत होने की आवश्यकता है ताकि इसका समाधान किया जा सके। मेरे अनुसार ऐसा करने वाले चालकों को प्रतिबंधित करना चाहिए अथवा दंडित किया जाना चाहिए।

अतः आपसे अनुरोध है कि इस पत्र को समाचार पत्र में प्रकाशित करें ताकि ऐसे लोग सजग हो जाएं व संबंधित अधिकारी गण भी इस समस्या के विषय में सोचें। अन्यथा यह समस्या और गंभीर रूप ले सकती है।

सधन्यवाद!

भवदीय

अ. ब. स.

प्रश्न संख्या : 5

(क) जनसंचार - सूचनाओं, विचारों व भावनाओं को इलेक्ट्रानिक माध्यमों के जरिए एक साथ कई लोगों तक पहुंचाना जन संचार (मीडिया) कहलाता है।

(ख) द्वारपाल - जनसंचार माध्यमों के संपादक, उपसंपादक व सहसंपादक को कहा गया है वे सूचनाओं का संकलन, संपादन व मुद्रण / प्रेषण को तय करते हैं।

(ग) वस्तुपरकता - यह संपादन का एक तत्व है जिसमें देखा जाता है कि दी गई सूचना संबंधित विषय के अनुरूप है या नहीं अथवा उसका विषय सजीव तथा रोचक हो।

(घ) ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना 1936 में हुई थी। अब यह प्रसार भारती के अंतर्गत आता है।

(ङ) विशेष लेखन - सामान्य लेखन से हटकर किए गए लेखन को विशेष लेखन कहते हैं।

प्रश्न संख्या : 6 (आलेख)

बाल श्रमिकों की समस्या

(क)

आज के परिवेश में जहां बच्चों की खेलने - पढ़ने की उम्र होती है, वहीं कुछ बच्चे होटलों में, फैक्ट्रियों में, खेतों में काम करते नजर आते हैं। वास्तव में बाल - मजदूरी एक अभिशाप है। इसको लेकर वैश्विक स्तर पर चिंतन किया जा रहा है।

आखिर क्यों अभिभावक अपने बालक को काम पर भेजते हैं? सबसे बड़ी समस्या है गरीबी। रोटी, कपड़ा और मकान की जरूरत को पूरी करने के लिए वे ऐसा रास्ता अपनाते हैं। दूसरी समस्या है अशिक्षा। जब बच्चे को शिक्षा से वंचित रखा जाएगा, स्वाभाविक है वह अपना गुजारा चलाने के लिए काम करेगा लेकिन वहां उस पर जिस प्रकार के अत्याचार होंगे व उससे आवश्यकता से अधिक काम लिया जाएगा, यह उनकी सोच से परे है।

(ख)

भारत में नोबेल विजेता कैलाश सत्यार्थी ने इस दिशा में 'बचपन बचाओ' आंदोलन चलाया है। वास्तव में यह आज की जरूरत है कि बाल मजदूरी को खत्म किया जाए व कड़े कानून बनाए जाएं।

"खत्म करो यह बाल - मजदूरी, पहले होगी शिक्षा पूरी।।"

खण्ड 'ग'

प्रश्न संख्या - 7

(क) सत्य कविता में कवि विष्णु खरे ने महाभारत के पात्रों और संदर्भों का सहारा लेकर सत्य की स्पष्टता जाहिर करने की कोशिश की है। कविता में विदुर को सत्य का प्रतीक बताया गया है तथा महाराज युधिष्ठिर को सत्य को पाने के लिए संकल्पित व्यक्ति का प्रतीक बताया है।

विदुर सत्य का प्रतीक हैं इसलिए वे युधिष्ठिर को अपने पीछे दौड़ाते हैं, अंततः युधिष्ठिर को सत्य की प्राप्ति होती है, जब विदुर उनके अंदर समा जाते हैं।

कवि ने इन प्रतीकों व माध्यमों का सहारा लोगों को सत्य की पहचान कराने के लिए की है। इनके अनुसार सत्य हमारे अंदर समाहित होता है बस हमें उसे पहचानने मात्र की जरूरत होती है।

(ख) देवसेना मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन है तथा स्कंदगुप्त से अत्यंत प्रेम करती है लेकिन स्कंदगुप्त किसी और को प्रेम करता है, कवि जयशंकर प्रसाद ने देवसेना की वेदना को स्पष्ट किया है -

(कृ.पृ.उ.)

- वह स्कंदगुप्त से प्रेम करती है व उसे पाने की आशा में उसका इंतजार करती है।
- बाद में जब स्कंदगुप्त उसे पाने की चाह रखता है तो देवसेना मना कर देती है और राष्ट्रसेवा का व्रत धारण कर लेती है।

उसका यह अत्यंत रोचक प्रेम प्रसंग उसकी हार और निराशा का कारण है। वह अपने आप को थके हुए पथिक के रूप में पेश करते हुए कहती है कि मैंने तो बस मधुकरियों में भीख लुटाई है।

प्रश्न संख्या : 8 (काव्य सौंदर्य)

(ख) संकेत - यह मधु _ _ _ _ _ _ _ _ _ पूत पय।

कविता का नाम - यह दीप अकेला

कवि का नाम - अज्ञेय

भावपक्ष - कवि ने दीप अकेला के प्रतीकार्थ के रूप में व्यष्टि के

समष्टि में विलय की बात कही है। उसने इसे मधु, गोरस तथा अंकुर आदि की संज्ञा देकर कहा है कि व्यक्ति का समाज में विलय अत्यंत हितकारी होगा। इन पंक्तियों में दीप के रूप में व्यक्ति को दर्शाया गया है।

कला पक्ष –
- भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है।
- छंदमुक्त कविता है व प्रतीकात्मकता है।
- कविता में शांत रस है व निर्वेद स्थायी भाव है।
- प्रसाद गुण विद्यमान है।
- रीति वैदर्भी है व उपनागरिका वृत्ति है।
- दृश्य बिंब है।
- शब्दशक्ति अभिधा है।

भाव साम्य :– साहिर लुधियानवी की निम्न पंक्तियां काव्यांश का भाव दर्शाती हैं →

एक-एक बूंद जब मिलती है तो बन जाती है दरिया
जब एक-एक कतरा मिलता है तो बन जाता है सेहरा
जब एक-एक राई मिल जाती है तो बन जाती है पर्वत
जब मिलता है एक-एक इंसा तो बन जाती है किस्मत।

तर्पण। अकर्म- ... है। अलंकार

(ग) संकेत - इस पद्य पर _ _ _ _ _ _ _ _ तेरा तर्पण ।

कविता का नाम - सरोज स्मृति
कवि का नाम - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

भाव पक्ष - कविता में कवि अपनी पुत्री के प्रति वियोग में अकर्मण्यता का बोध कर रहें हैं और कह रहे हैं कि मैंने अपने जीवन में जितने भी सद्कार्य किए हैं उन्हें मैं तुम्हें अर्पित करता हूँ । कविता एक पिता की पुत्री के मर जाने के बाद की व्यथा पर केंद्रित है ।

कला पक्ष -
- भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है।
- रस करुण है व स्थायी भाव शोक है।
- कविता छंदमुक्त है। लयात्मकता व गेयात्मकता है।
- 'कर - करता' तथा 'तेरा तर्पण' में अनुप्रास अलंकार
- प्रसाद गुण व वैदर्भी रीति विद्यमान है।
- दृश्य बिंब है अभिधा शब्दशक्ति है।

प्रश्न संख्या - 1 (सप्रसंग व्याख्या)

1) संकेत - राघौ ! एक बार - - - - - - - - - कमल हिम मारे ।।

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक अतरा भाग-2 के 'पद' नामक कविता से लिया गया है। जिसके रचयिता भक्ति काल के महान कवि गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

प्रसंग - निम्न काव्यांश के माध्यम से कवि ने राम वनगमन के पश्चात उनकी माता कौशल्या के वियोग का वर्णन किया है। उनका पुत्र के प्रति असीम प्रेम है जो कि उनके करुण में झलकता है। वे बार-बार भगवान राम से अयोध्या वापस लौट आने की प्रार्थना करती हैं।

व्याख्या - कौशल्या माता राम वनगमन के पश्चात कहती है कि हे रघुनंदन! एक बार वापस आ जाओ। मेरे लिए न सही लेकिन उन घोड़ों की खातिर तो आ जाओ जो तुम्हें अत्यंत प्रिय थे, जिनको तुम अपने हाथ से भोजन खिलाते थे, उन्हें नहलाते थे। वे भी तुम्हारी प्रतीक्षा की आस में हैं। तुम्हारे छोटे भाई भरत

उनका ख्याल तुमसे भी अधिक रखता है परंतु वे तुम्हारे बि
बिना नहीं रह सकते । तुम्हारे बिना उनका अत्यंत बुरा हाल
है वे दिन -प्रतिदिन कमजोर होते जा रहे हैं । जैसे कि अब
उनका तुम्हारे सिवा किसी से वास्ता ही नहीं है,

प्रस्तुत पद्यांश के माध्यम से कवि ने एक मां की पुत्र से
बिछोह की पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया है कि मां किन-कि
तरीकों से अपने पुत्र को वापस बुलाने का प्रयत्न करती है यहां
तक कि कौशल्या माता राहगीरों के पास भी यह संदेश भिजवा
हैं।

विशेष —
- भाषा ~~ब्रज मिश्रित~~ अवधी है।
- छंद पद है।
- रस वात्सल्य ~~श्रृंगार~~ रस है व वात्सल्य स्थायी भाव है
- बार बारहि बिलोकि पथ ष्याय पोसहि में अनुप्रास
  अलंकार तथा बार-बार में पुनरुक्ति प्रकाश
  अलंकार निहित है।
- स्वर शैली - ... चुचकारे । ... बिसारे॥ ... हि
  ... हित मारे॥

प्रश्न संख्या - 10 (जीवन-परिचय)

भीष्म साहनी

जीवन वृत्त - भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 को रावलपिंडी (पाकिस्तान) में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू तथा अंग्रेजी में हुई थी। इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी की उपाधि हासिल की व प्रारंभ में व्यापार से गुजारा किया। इसके पश्चात इन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं के लिए संपादन का कार्य भी किया तथा अध्यापन कार्य में संलग्न हो गए। इन्हें 'तमस' के लिए साहित्य अकादमी सम्मान भी मिला है। सन् 2000 में, 85 वर्ष की उम्र में इनका देहावसान हो गया।

रचनाएं -
- निशाचर, पाली, डायन (कहानी संग्रह)
- तमस, बसंती, कुंतो (उपन्यास)
- माधवी, कबिरा खड़ा बाजार में (नाटक)
- गुलेल का खेल (बालोपयोगी कहानियां)

भाषा शैली की विशेषताएं -
- इनकी भाषा शैली में आत्मपरकता व

व्याक्ति व्यंजकता निहित है।
मुहावरेदार शैली का प्रयोग व छोटे-छोटे कथन सार को प्रभावी बनाते हैं।
जैसे - "रे तू तो पागल है !"
- उर्दू का व्यापक प्रयोग व भाषा में धारा-2 पेजानी का पुट भी शामिल है।
- जैसे - उर्दू शब्द - मुख्तार, अमला, दाखिलखारिज का प्रयोग पाठ में किया है।

प्रश्न संख्या - 11 (सप्रसंग व्याख्या)

संकेत - चारों ओर ---------- प्रेरणा देती है।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग-2 के कुटज नामक पाठ से लिया गया है, जिसके लेखक प्रसिद्ध निबंधकार हजारी प्रसाद द्विवेदी हैं।

प्रसंग - गद्यांश में लेखक ने हिमालय में उगते वाले वृक्ष कुटज की विशेषताओं का वर्णन किया है कि वह विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भी हरा-भरा है। उन्होंने कुटज को पहाड़फोड़, पातालभेद, अकुतोभय आदि नामों की संज्ञा दी है।

व्याख्या - कुटज वृक्ष के बारे में लेखक की राय है कि चारों ओर प्रतिकूल माहौल होने के बावजूद वह हरा भरा बना हुआ है तथा कठोर पाषाण से भी उसने अज्ञात जलस्रोत ढूंढ कर उसका रस खींच लिया है। उन्होंने हिमालय की तुलना रूखे के मस्तिष्क से की है व कहते हैं कि वह कहीं पर भी मस्त बना हुआ है कि ईर्ष्या होती है। वास्तव में ऐसी अद्वितीय कठिन जीवन शक्ति काबिल-ए-तारीफ है। उसकी जीवन-शक्ति संपूर्ण प्राणी-जगत के लिए प्रेरणा बनकर उभरती है। वास्तव में लेखक कुटज के माध्यम से संदेश प्रसारित करना चाह रहा है।

टिप्पणी -
- गद्यांश की भाषा सरल एवं प्रांजल है।
- भाषा शैली में एक ऐसी अनोखी कहावत है जो विविध उद्धरणों से रोचक बनाते विचार सूत्र की महत्ता को

हुए विषय को सहज बनाती है।
स्पष्ट कथन, विचार की गंभीरता व भाषा की सहजता है।
• निम्न पंक्तियों के माध्यम से भी कुटज की विशेषता झलकती है-
" अनुकूलम् संवेदनं सुखम्
प्रतिकूलम् संवेदनं दुखम् ।। "

प्रश्न संख्या - 12

(क) घड़ी के पुर्जे के माध्यम से लेखक गुलेरी जी ने धर्म के रहस्य जानने वाला पर जोरदार प्रहार किया है व निम्न बातें स्पष्ट करने की कोशिश की है -
• धर्मशास्त्री मानते हैं कि लोगों को धर्म का ज्ञान तो सीखना चाहिए लेकिन उसके रहस्यों को जानने की उन्हें कोई जरूरत नहीं है।
• लेखक के अनुसार यह काम धर्मशास्त्रियों का है कि वे धर्म की जानकारी रखें।
• लेखक कहता है कि लोगों को घड़ी का समय देखना सीखना

चाहिए लेकिन घड़ी के पुर्जे खोलकर उसे ठीक करने की उन्हें क्या जरूरत? यह घड़ी साज का काम है।

- यहां रहस्यवादियों के ऊपर व्यंग्य किया गया है कि वे लोगों के साथ छलावा करते हैं वे लोगों को धर्म के बारे में सही जानकारी नहीं देते।

लेखक धर्मावलंबियों की सोच को प्रकट करता है जिन्हें यह भी पता नहीं कि घड़ी चल रही है या नहीं लेकिन अपने पुरखों की घड़ी जरूर जेब में लेकर घूमते हैं।

(ख) कच्चा चिट्ठा लेखक ब्रजमोहन व्यास की आत्मकथा है। जिसमें उन्होंने इलाहाबाद संग्रहालय का जिक्र किया है। इलाहाबाद संग्रहालय को ब्रजमोहन व्यास जी का योगदान निम्न है -

- उन्होंने अपने जीवन काल में अनेकों अभिलेख, सिक्के, मृणमूर्तियां, ताम्रपत्र एकत्र किए थे।
- उन्होंने 23 साल नगरपालिका अधिकारी के रूप में कार्य किया जहां इलाहाबाद संग्रहालय का भवन था। उन्होंने अपनी जान से ज्यादा इस संग्रहालय की देखरेख की।

- उन्होंने संपूर्ण जीवन संग्रहालय के लिए लगा दिया । वे जहां कहीं जाते थे । संग्रहालय के लिए सामग्री एकत्र करना नहीं भूलते थे ।
- उन्होंने इलाहाबाद संग्रहालय ~~की~~ के बड़े भवन के लिए जवाहर लाल नेहरू द्वारा आधारशिला रखवाई तथा इसके बाद इसका संरक्षक किसी और को बना दिया ।

वास्तव में व्यास जी ने संग्रहालय के लिए अतुलनीय योगदान दिया ।

प्रश्न संख्या - 13

तो हम सौ लाख बार बनाएंगे " के माध्यम से सूरदास की पुनर्नि... की भावना उभरती है तथा पता चलता है कि वह मानवोचित ... से भरपूर है । उसने अपनी ईर्ष्या व अपमान तथा प्रतिशोध ... नियंत्रण रखा

- सूरदास की झोंपड़ी जल जाने से उसे अत्यंत क्षति हुई तथा उस... पांच सौ रुपये चोरी ले गया लेकिन इसके बावजूद भी वह और...

से ईर्ष्या का भाव नहीं रखता।
सभी गांववालियों के सामने उसका अपमान होता है लेकिन वह स्वाभिमानी है, आत्मनिर्भर [illegible] है। वह अपमान सहन करता है और अपनी हार पर रात की नवाब [illegible] सी खुशी मनाता है।
उसके अंदर प्रतिशोध लेने की भावना नहीं है। वह चाहता तो भैरो पर आरोप-प्रत्यारोप कर सकता था। परंतु उसके गुणों ने उसे प्रतिशोध करने से रोक दिया।
उसके अंदर निम्न मानव मूल्यों ने जन्म लिया तथा इस कहानी का नायक साबित किया।

प्रश्न संख्या - 14

(3) आरोहण कहानी के आधार पर पहाड़ पर रहनेवाले लोगों का जीवन अत्यंत कष्टमय है। [illegible] इसका पता चलता है।
पहाड़ में लोगों को प्राकृतिक [illegible] का शिकार होना पड़ता है तथा

इस कारण वे अपनों को भी खो देते हैं।

- पहाड़ पर लोगों को हिमांग जैसे पहाड़ चढ़कर अपने घर तक पहुँचना पड़ता है।
- पहाड़ में मदीप जैसे बच्चों को छोटी उम्र में ही बालमजदूरी का शिकार होना पड़ता है।
- पहाड़ में स्त्रियों की दशा भी दयनीय है। वे बहुत परिश्रमी होती हैं तथा उन पर अन्याय भी होते हैं।
- पहाड़ में लोगों को पिछड़ा हुआ समझा जाता है क्योंकि वहां विकास की छाया तक नहीं पहुँची है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो पहाड़ के लोग रूप दादा जैसे परिश्रमी होते हैं तथा आजीविका के लिए खेती पर निर्भर रहते हैं।

(ख) हमारी वर्तमान सभ्यता नदियों को गंदे पानी के नाले बना रही है, क्योंकि –

- उद्योग अपना जल नदियों में प्रवाहित कर देते हैं जिससे नदियां प्रदूषित हो रही हैं।

विभिन्न प्रकार की वस्तुएं धार्मिक प्रकृति के कारण प्रवाहित करते हैं। जिससे वे गंदी हो रही हैं। जिससे वे सूखे नाले में परिवर्तित नदियों पर बांध बनाए जा रहे हैं
होते जा रहे हैं।

इस दिशा में निम्न प्रयास किए जा सकते हैं —

(1) उद्योगों पर कानून बना दिए जाएं कि वे अपना गंदा जल नदियों में न प्रवाहित करें।

(2) नदियों के लिए नमामि गंगे जैसे लाभदायक योजनाएं लागू की जाती चाहिए जो नदियों की सफाई में लाभकारी होंगी।

नदियां सदानीरा होनी चाहिए इसलिए हमारा कर्तव्य है कि हम इस दिशा में एक कदम बढ़ाए और शपथ लें।